लौट के बुद्धू घर को आए

सतीश अग्निहोत्री

मिन्नी को पता था कि दीपू अब तक रसोईघर में पहुँच चुका होगा – शिकायत लेकर। वो ऊँचे स्वर में न्यूटन के गति के नियम याद करने लगी।

"आवेग के परिवर्तन की दर, लगने वाले बल के समानुपाती होती है... आवेग के परिवर्तन की दर... हूँ... ये परिवर्तन की दर हर जगह आ टपकती है!" उस दिन धीरज भैया ही तो बता रहे थे – जगह के परिवर्तन की दर को वेग कहते हैं, वेग के परिवर्तन की दर को त्वरण कहते हैं। फिर उसने बड़ी-ही मासूमियत से उनसे पूछा था, "और फिर उसके परिवर्तन की दर को?" जवाब में धीरज भैया ने उसके कान खींचते हुए कहा था, "तू बहुत बदमाश होती जा रही है।" बस, हर बात का यही जवाब! जब भी कोई टेढ़ा सवाल किया तो धौंस जमाने लगते हैं; इतनी मोटी-मोटी किताबें न जाने कहाँ से उठा लाते हैं और पढ़ते रहते हैं। फिर भी त्वरण के परिवर्तन की दर को क्या कहते हैं, ये नहीं मालूम।

"मिन्नी!" सामने माँ खड़ी थीं, दाहिना हाथ आटे से सना। थोड़ा आटा बालों पर भी लग गया था और बाएँ हाथ में - "अरे बाप रे!" मिन्नी के देवता कूच कर गए। बाएँ हाथ में बेलन था और उसके आँचल का छोर पकड़े पीछे वो शैतान, दीपू खड़ा था।

"तुमने फिर छोटे भाई पर हाथ उठाया? इतनी बड़ी हो गई हो फिर भी अक्ल नहीं आई। ऐं?"

"मैंने क्या किया? उलटा वो ही मुझे तंग कर रहा था। मैं गति के नियम याद कर रही थी तो आकर बोला 'खेलने चलो'। अगर मैं खेलने चली गई तो पढ़ाई कौन करेगा? और जब मैंने मना किया तो मेरी चोटी खींचने लगा।"

"और तुमने उसे थप्पड़ मार दिया?" माँ बोलीं। "थोड़ी देर खेल ही लेती उसके साथ तो क्या बिगड़ता था?"

"तुम उसे कुछ नहीं कहती हो। कितनी ज़ोर-से चोटी खींची मेरी!" मिन्नी रुआँसी हो गई। "और फिर मैं पढ़ रही थी।"

"हाँ, पढ़ाई-पढ़ाई! इतनी पढ़ाई कर-कर के परीक्षा में कौन-सा तीर मार लेती हो? वो पड़ोस की नीता ही तो हमेशा पहली आती है क्लास में और महारानी सातवें-आठवें नम्बर

पर। छोटे भाई के साथ दो मिनट खेल लेती तो कोई नुकसान नहीं हो रहा था तेरा। खेलना तो दूर, उस पर हाथ उठा दिया।"

मिन्नी सब कुछ बर्दाश्त कर लेती थी लेकिन सातवें-आठवें नम्बर का ज़िक्र उसे कभी सहन नहीं होता था। गुस्से में उसके आँसू निकल आए। "छोटा भाई-छोटा भाई, जब देखो तब छोटा भाई! वो तो ज़िन्दगी-भर मुझसे छोटा ही रहेगा, मैं क्या उसी के साथ खेलती बैठूँ? तुम तो हमेशा उसी को शह देती हो। तुम्हारा लाड़ला बेटा है न। छोटा नहीं बनना था तो मुझसे पहले आ जाता। मैं नहीं जाऊँगी खेलने!"

मिन्नी कुछ और बोल पाती, उससे पहले ही माँ ने दो तमाचे लगा दिए। "बोल-बोल, और बढ़-बढ़ कर बोल! तेरी दवाई बस मरम्मत ही है। आने दे तेरे पापा को, उनके हाथ का प्रसाद मिलना चाहिए।"

दीपू बेचारा कोने में सहमा खड़ा था। वह मन-ही-मन सोचने लगा, "मैंने सोचा था, मिन्नी को माँ बस ज़रा-सी डाँट पिलाएँगी, कुछ मज़ा आएगा। यहाँ तो और ही कुछ हो गया। ये माँ भी क्या हैं, कुछ समझती नहीं हैं। मारने की क्या ज़रूरत थी? खाहमखाह मुझ पर मुसीबत। अब शाम को मिन्नी न मुझे इमली तोड़कर देगी, न होमवर्क में मदद करेगी।"

माँ वापस रसोईघर में चली गईं। दीपक कुछ सेकण्ड तक अपराधी भाव से खड़ा रहा। उसे पता था कि उसके मनाने का मिन्नी पर कोई असर नहीं होगा। वह चुपचाप बाहर जाकर बरामदे की सीढ़ियों पर बैठ गया।

"क्यों दीपू मियाँ, यहाँ क्या हो रहा है? तुम इस वक्त घर में? मामला क्या है?"

दीपू ने आँखें उठाकर देखा। धीरज भैया सामने खड़े थे। उसने चैन की साँस ली, "चलो, अब इस मिन्नी की बच्ची को मनाने में कोई दिक्कत नहीं आएगी।" उसने मिन्नी की नकल उतारते हुए रुआँसा मुँह बनाया और उस कमरे की तरफ इशारा किया जहाँ मिन्नी अब भी मुँह फुलाए बैठी हुई थी।

"ओहो, तो ये बात है! चाची ने आज सुबह-सुबह करारे-करारे बिस्कुट खिलाए हैं मिन्नी को, है न?" दीपक ने 'हाँ' में अपना सिर हिलाया। "ज़रूर तुम्हारी कारस्तानी होगी।" कहते हुए धीरज भैया ने अपना मोर्चा रसोईघर की ओर बढ़ाया। उन्हें पता था कि हर रविवार को रसोईघर में ज़रूर कुछ-न-कुछ पक रहा होता था। मिन्नी को सुनाने के लिए उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा, "क्यों चाची, आज सुबह-सुबह ही रामायण पाठ हो गया? हमारी मिन्नी कोप भवन में बैठी हुई है?"

"अरे बेटा, काहे का कोप और काहे का भवन! ये दोनों नाक में दम कर देते हैं। खासकर पापा न हों तो आफत ही आ जाती है, हर बात पर झगड़ा। ये मिन्नी कम्बख्त इत्ती बड़ी हो गई है, फिर भी समझदारी से काम नहीं लेती। मेरा बस चले, तो बेटा, इसे अगले साल बोर्डिंग स्कूल में भर्ती करवा दूँ।" चाची अपनी रौ में बोलती रहीं।

"अरे बाप रे, सीधा बोर्डिंग स्कूल! यानी मामला काफी सीरियस है," धीरज ने सोचा। उन्होंने पकौड़ों की प्लेट उठाई और बोले, "चलो, हम ज़रा देख आएँ गुस्सा कितनी डिग्री पर है।"

"हाँ भई, अब तुम्हीं मनाओ महारानी को। लेकिन कोई फायदा नहीं होगा। अब वो सारा दिन बिसूरती रहेगी।" चाची ने सुनाया।

धीरज भैया मिन्नी के पास गए, "ओ मिन्नी, ये पकौड़े हैं न, बड़े ही शानदार बने हैं। ज़रा खाकर तो देखो।"

"आप और आपके पकौड़े जाएँ भाड़ में!" मिन्नी तुनककर बोली। "सुना नहीं आपने कि मैं इत्ती बड़ी हो गई हूँ पर ज़रा भी समझदारी से काम नहीं लेती? वो आपका समझदार दीपू बैठा है न उधर – उसे दीजिए पकौड़े, मुझे नहीं चाहिए।"

"बाप रे बाप! तुम तो खाहमखाह मुझ पर बिगड़ रही हो। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

मिन्नी निरुत्तर रही। धीरज भैया ने

पकौड़ों की प्लेट उसकी ओर बढ़ाते हुए पूछा, "भाई हुआ क्या है, यह तो बताओ।"

"होना क्या है, मैं बड़ी हूँ – यही हुआ है इसलिए मैं सबकी डाँट सुनूँ! सबके हाथों मार खाऊँ! बस और क्या? दीपू छोटा है इसलिए मुझ पर रौब गाँठने का उसे पूरा हक है।" बोलते-बोलते मिन्नी के आँसू निकल आए। "मेरे पास अगर अलाद्दीन का चिराग होता न, तो इस दीपक के बच्चे को बड़ा करवा देती, फिर देखती।"

"भई, वह तो हो नहीं सकता। हाँ वैसे, आदमी छोटा ज़रूर हो सकता है।"

"क्या? ऐसा होता है?" मिन्नी ने उत्सुकता से पूछा। "हाँ," धीरज भैया ने कहा, "लेकिन मेरे खयाल से ऐसी मशीन अभी तक बनी नहीं है, सिर्फ लोगों ने हिसाब लगाया है। मान लो, तुम खूब तेज़ उड़ने वाले रॉकेट में बैठकर कहीं गई हो, तो जब तुम वापस आओगी, तुम्हारी उम्र कम हो जाएगी।"

"सच्ची?" मिन्नी की आँखें उत्सुकता से चमक रही थीं।

"हाँ, सच! चाहो तो मेरे पिताजी से पूछ लेना। इसको वैज्ञानिक लोग 'ट्विन पेराडॉक्स' यानी जुड़वा भाइयों की पहेली के नाम से भी जानते हैं।" इस नई जानकारी के मिलने की खुशी में मिन्नी अपना सारा रोना-धोना भूल गई। धीरज भैया जब तक अपनी बात खत्म करते, मिन्नी पकौड़ों की प्लेट खत्म कर चुकी थी।

तभी मिन्नी के पिताजी आए। "धीरज!" दूर से ही उन्होंने आवाज़ लगाई, "अरे धीरज बेटा, बड़े मौके पर आए।"

धीरज ने हाँ-में-हाँ मिलाई। "जी हाँ चाचाजी! वो आपके घर में जब पकौड़े बन रहे थे न, मुझे अपने घर में खुशबू आने लगी।"

"अरे पकौड़ों की बात कौन कर रहा है?" चौधरी साहब बोले, "तुम ज़रा मेरे साथ बाज़ार चलो, काफी सामान खरीदकर लाना है।"

"मर गए!" धीरज भैया ने कहा, "अच्छा मिन्नी, मैं तुम्हें इसके बारे में बाद में बताऊँगा।"

धीरज भैया तो यह बताकर चले गए लेकिन अनजाने में ही वे एक बहुत बड़ी घटना को निमंत्रण दे बैठे थे।

* * *

चौधरी साहब विक्रम रॉकेट अनुसन्धान केन्द्र में वैज्ञानिक की हैसियत से काम कर रहे थे। धीरज के पिताजी, श्री शर्मा, उस केन्द्र में वरिष्ठ इंजीनियर थे। सारा विक्रमनगर शहर से करीब बीस मील दूर था।

अनुसन्धान केन्द्र में एक बात थी जो धीरज को ही क्या, बड़े-बड़े लोगों को मालूम नहीं थी। धीरज के पिता यानी शर्मा साहब और उनकी टीम

बरसों से एक द्रुतगति रॉकेट के निर्माण में जुटे हुए थे। उनके प्रयत्न अब करीब-करीब पूरे होने को आए थे। अब तक इस्तेमाल किए गए सभी रॉकेटों की गति, इस रॉकेट की गति के सामने फीकी पड़ने वाली थी। इस रॉकेट की एक विशेषता यह थी कि इसमें एक कमरे का निर्माण किया गया था जिसमें कोई भी व्यक्ति बिना स्पेस-सूट पहने रह सकता था और वहीं से पूरे रॉकेट पर नियंत्रण रख सकता था। इसकी सफलता की जाँच के लिए पहली बार एक प्रशिक्षित बन्दर भेजा जाने वाला था।

रॉकेट-अड्डा बड़ी ही अलबेली जगह पर था। शर्मा साहब का बँगला काफी लम्बे-चौड़े क्षेत्र में फैला हुआ था। वहाँ उन्होंने कोई दस साल पहले एक पूजाघर बनवाया था। लेकिन हकीकत यह थी कि उस बड़े-से पूजाघर के ठीक नीचे रॉकेट-घर था।

धीरज के जाने के बाद मिन्नी काफी देर तक छोटा होने की तरकीब के बारे में सोचती रही। टेढ़ी खीर तो ऐसे रॉकेट के बनने में थी। जब रॉकेट ही नहीं है तो वो शर्मा अंकल को कहेगी क्या और वो बेचारे भी क्या करेंगे। "लेकिन पूछने में हर्ज़ क्या है?" उसने सोचा। "हो सकता है ऐसी मशीन हो भी। ये धीरज भैया उतने बुद्धिमान थोड़े ही हैं जितना दिखाते हैं। उनकी किताब में लिखा होगा तो बता सकते हैं, नहीं तो उन्हें कुछ मालूम भी नहीं होता। अब देखो, त्वरण के परिवर्तन की दर को क्या कहते हैं, ये भी उन्हें मालूम नहीं। पापा को ज़रूर मालूम होगा लेकिन ये पापा भी... ऐसे कहीं पापा होते हैं! कुछ पूछो तो 'बेटा मुझे अभी तंग मत करो'। हमेशा मोटी-मोटी किताबों में डूबे रहते हैं। किसी दिन अगर पूछा 'पापा आपका नाम क्या है?' तो भी शायद बोलेंगे 'माँ से पूछ लो बेटा, अभी मैं बिज़ी हूँ'। बिज़ी हैं तो हैं, मेरी बला से! शर्मा अंकल को देखो, मुझे कितना मानते हैं। वो तो पापा से भी ज़्यादा मोटी-मोटी किताबें पढ़ते हैं। फिर भी मुझे हमेशा प्यार से बुलाते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं - अन्तरिक्ष यात्रियों की, ग्रहों की, तारों की। पापा तो बस दीपू को ही बताते हैं। चलो, शर्मा अंकल से ही कल शाम को पूछूँगी।"

दूसरे दिन शाम को, मिन्नी शर्मा साहब के दरवाज़े पर हाज़िर थी। शर्मा साहब अपनी घूमती कुर्सी पर बैठे थे। मिन्नी को यह कुर्सी काफी अच्छी लगती थी। कुर्सी से भी अच्छी उसे वे ढेर सारी करामाती मशीनें लगती थीं, जो शर्मा साहब ने अपने कमरे में लगा रखी थीं। इस समय, वे दरवाज़े की ओर पीठ किए हुए थे। मिन्नी का अन्दाज़ा सही निकला। वे अपनी तुरन्त-कॉफी मशीन पर झुके हुए थे। "मैं अच्छे मौके पर आई हूँ।" मिन्नी ने सोचा, "अब ज़रूर बिस्कुट मशीन से बिस्कुट निकलेंगे।" शर्मा साहब ने मशीन का बटन दबाया।

तश्तरी निकली। मशीन में से एक हाथ बाहर आया, छः बिस्कुट तश्तरी में रखे और वापस अन्दर चला गया। मिन्नी दबे पाँव कुर्सी के नीचे बैठ चुकी थी। उसने कुर्सी को धीरे-से घुमा दिया।

"अरे!" शर्मा साहब के मुँह से निकला। उन्होंने दरवाज़े की ओर नहीं देखा था। जब तक वे फिर से घूमकर कॉफी की ओर आए, मेज़ पर से बिस्कुटों की प्लेट गायब हो चुकी थी। वे हँसे, "तो ये चोर है! चोर साहब, कुर्सी के नीचे से निकलो, मेज़ पर और भी बिस्कुट पड़े हैं।"

मिन्नी कुर्सी के नीचे से निकली। और सीधा प्रश्न दागा, "अंकल, आप मुझे दीपू से छोटा बना देंगे?"

"अरे, न देखा आव न देखा ताव, न बिस्कुट देखे न पाव, ये दीपू से छोटा बनने की धुन कहाँ-से आ गई? ऐसा तो सम्भव नहीं है बेटा।"

"हेहे, सम्भव नहीं है! धीरज भैया कह रहे थे कि ऐसा एक रॉकेट होता है जिसमें बैठकर उड़ने वाले की उम्र कम हो जाती है।" शर्मा साहब के हाथों से तश्तरी छूटकर मेज़ पर गिर गई। उन्होंने मिन्नी को आगे कहते सुना, "वो बोल रहे थे कि अभी ऐसा

रॉकेट कहीं बना नहीं है, लेकिन लोगों ने हिसाब लगाया है।"

"ओह!" शर्मा साहब ने चैन की साँस ली। "बेटा, हिसाब तो लोग बहुत साल पहले लगा चुके हैं। सौ साल से भी ऊपर हो गए उसको। लेकिन ऐसा रॉकेट बना पाना सम्भव नहीं है।"

"क्यों सम्भव नहीं है?" मिन्नी ने पूछा।

"उसके बहुत-से कारण हैं बेटा। हमारे पास इतने ताकतवर इंजन नहीं हैं, फिर इतने तेज़ रॉकेट को बनाने के लिए धातु का निर्माण नहीं हुआ है वगैरह-वगैरह।"

"वो क्यों? अन्य रॉकेट्स जिस धातु से बनते हैं, उसी से ये रॉकेट भी बना डालिए।"

"नहीं-नहीं बेटा," अंकल ने प्यार से समझाया, "देखो, जब रॉकेट अन्तरिक्ष से घूम-घाम कर वापस धरती की ओर आते हैं न, तो वे धरती के वायुमण्डल में तेज़ी-से प्रवेश करते हैं। उस समय हवा से रगड़ खाने के कारण उनकी बाहरी परत जल उठती है।"

"वे इतनी तेज़ी-से प्रवेश करते हैं?"

"हाँ, उनकी गति बहुत ज़्यादा रहती है। तुम्हारे हवाई जहाज़ तो उसके सामने कुछ भी नहीं। जो रॉकेट जितनी तेज़ी-से धरती के वायुमण्डल में प्रवेश करता है, उतनी ही तेज़ी-से उसकी ऊपरी परत जल उठती है। वहाँ इतना ज़्यादा तापक्रम निर्मित होता है कि ये लोहा वगैरह तो सेकण्डों में गलकर खत्म हो जाएँगे। इसलिए जितना तेज़ रॉकेट बनाना हो, उसे उतनी ज़्यादा कठिन धातु से बनाना पड़ता है, जो खूब ऊँचे तापक्रम पर भी गले नहीं।"

"लेकिन अंकल," मिन्नी ने पूछा, "ये रॉकेट में घूमने और उम्र कम होने का क्या सम्बन्ध है?"

"वो समझाना ज़रा टेढ़ी खीर है, बेटा।"

"हाँ-हाँ, आप भी पापा जैसी टालमटोल शुरू कीजिए – बेटा, जब तुम बड़ी हो जाओगी तब समझोगी, अभी मेरा दिमाग मत खाओ।"

"अरे, नहीं-नहीं!" शर्मा अंकल ने कहा, "मैं कब ऐसा कह रहा हूँ। तुम टेढ़ी खीर खाने को तैयार हो, तो मैं बताता हूँ।" शर्मा साहब ने गरम-गरम कॉफी दो कप में डाली और चुस्कियों के बीच बताने लगे।

"बेटा, तुमने आइंस्टाइन महोदय का नाम तो सुना होगा। वे बहुत बड़े वैज्ञानिक थे। सौ साल से भी पहले, उन्होंने सापेक्षतावाद का सिद्धान्त दुनिया को दिया था। सापेक्षतावाद के सिद्धान्त के बारे में तुमने कभी सुना है?" मिन्नी ने 'न' में सिर हिलाया। यह 'वाद' उसके कुछ पल्ले नहीं पड़ा।

"देखो," शर्मा साहब ने बताया,

"अब धीरज तुमसे काफी बड़ा है, यानी तुम्हारी अपेक्षा उसकी उम्र ज़्यादा है। अब उसकी अपेक्षा मेरी उम्र ज़्यादा है। अब बेटा, मेरे पिताजी को तुमने देखा है न, उनकी उम्र मेरी अपेक्षा काफी अधिक है। इसलिए बड़ा-छोटा होना सापेक्ष होता है। धीरज तुम्हारे लिए बड़ा है, मेरे लिए छोटा है। आया समझ में?" मिन्नी ने 'हाँ' में सिर हिलाया।

"उसी तरह लम्बा होने की अवधारणा भी सापेक्ष है। अब देखो, धीरज तुमसे कितना लम्बा है लेकिन उसे ऊँट के साथ खड़ा कर दो तो कैसा लगेगा?"

"हीहीही..." मिन्नी को इस खयाल में काफी मज़ा आया। "धीरज भैया तो ऊँट के आगे बिलकुल पिद्दी लगेंगे।"

"वैसी ही बात गति के बारे में भी है।" शर्मा अंकल ने कहा, "जैसे साइकिल आदमी से तेज़ दौड़ती है, पर रेलगाड़ी के मुकाबले धीमी होती है। ऐसे ही, हवाई जहाज़ रेलगाड़ी से तेज़ चलता है। लेकिन गति के बारे में एक पाबन्दी है जो दूरी या समय के मामले में नहीं होती क्योंकि उन्हें अनन्त तक बढ़ाया जा सकता है। पर गति की पाबन्दी यह है कि कोई भी वस्तु प्रकाश से ज़्यादा तीव्र गति से नहीं चल सकती।"

"यानी प्रकाश दौड़ भी सकता है?" मिन्नी ने पूछा।

"हाँ बेटा, अगर हम यहाँ से टॉर्च जलाएँ और चाँद की ओर रुख करें तो प्रकाश को वहाँ पहुँचने में कुछ मिनट लग जाएँगे। आम जीवन में हमें यह पता नहीं लगता क्योंकि प्रकाश बहुत ही तीव्र गति से फैलता है। जानती हो, वह गति क्या है? एक लाख छियासी हज़ार मील प्रति सेकण्ड।"

"अरे बाप रे!" मिन्नी ने कहा। उस दिन धीरज भैया महज़ सौ किलो मीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से मोटर साइकिल चला रहे थे तो वह कितना घबरा गई थी।

"और यही वजह है कि ग्रहों, तारों वगैरह की दूरियाँ मापने के लिए वैज्ञानिक प्रकाश-वर्ष की इकाई का व्यवहार करते हैं। यानी एक वर्ष में प्रकाश जितनी दूरी तय करता है। अब सूरज को देखो, हमसे महज़ आठ प्रकाश मिनट दूर है।"

"यानी वहाँ से निकले हुए प्रकाश को हम तक पहुँचने में आठ मिनट लगते हैं?" मिन्नी ने पूछा।

"बिलकुल ठीक! लेकिन बेटा, जैसे-जैसे किसी वस्तु, मान लो रॉकेट, की गति बढ़ने लगती है और प्रकाश की गति के करीब आने लगती है, कई मज़ेदार बातें होती हैं। जैसे, तुम्हें लगेगा कि उस रॉकेट में जो पटरी है, उसकी लम्बाई घट रही है। उसमें जो घड़ी है, वह धीरे-धीरे चल रही है और उस रॉकेट में जो चीज़ें हैं, उनका वज़न बढ़ रहा है।"

"क्या ऐसा वाकई होता है?"

"नहीं बेटा, यह सब 'तुम्हें' लगेगा पर रॉकेट में बैठे आदमी को ऐसा कोई परिवर्तन नज़र नहीं आएगा, बल्कि उसे लगेगा कि तुम्हारे हाथ में जो घड़ी है, वह सुस्त है या तुम्हारा वज़न बढ़ा है। ऐसा इसलिए कि उसके लिए तुम्हारी गति उतनी ही है जितनी तुम्हें उसकी गति लगती है।"

"लेकिन जब हम दोनों फिर एक जगह आ जाएँगे, तब?"

"तब बस पहले जैसा मामला हो जाएगा, दोनों की घड़ियाँ एक जैसी चलेंगी, वज़न एक बराबर हो जाएगा।"

"लेकिन अंकल, इसमें उम्र घटने की बात कहाँ से आई?" मिन्नी अपने मतलब की बात पर आई।

"हाँ बेटा, मैं वही बताने जा रहा था। अचरज की बात है 'जुड़वा भाइयों की पहेली'। मान लो, दो जुड़वा भाई हैं, उनमें से एक को हम खूब तेज़ रफ्तार रॉकेट में अन्तरिक्ष में भेज देते हैं और दूसरा उसकी वापसी का इन्तज़ार करता है। कुछ सालों बाद, रॉकेट में उड़कर जाने वाला भाई वापस चला आता है। अड्डे पर उतरकर वह देखेगा कि इन्तज़ार करने वाला उसका भाई, अधेड़ हो चुका है और वह खुद अभी तक जवान है।"

"वो कैसे?" मिन्नी ने हैरानी-से पूछा।

"यही तो, बेटा, वैज्ञानिकों के लिए पहेली थी। उनके हिसाब से वापस आने पर दोनों भाइयों की उम्र समान होनी चाहिए थी क्योंकि अगर हम सिर्फ गति के हिसाब से देखें, तो दोनों भाइयों में कोई फर्क नहीं होना चाहिए। एक की अपेक्षा दूसरे की गति वही है जो दूसरे की अपेक्षा पहले की। पर बाद में देखा गया कि जो भाई रॉकेट में जाता है, वह शून्य की गति से शुरुआत करके काफी अधिक गति पाता है, और जब धरती पर वापस पहुँचता है तो उसकी गति फिर शून्य हो जाती है।"

"यानी उसकी गति के परिवर्तन की दर बहुत होती है।" मिन्नी ने अँधेरे में तीर मारा।

"शाबाश!" शर्माजी ने कहा, "तुम तो जीनियस हो भाई! तुमने ठीक ही सोचा, जो भाई त्वरण से गुज़रता है उसकी उम्र घटती है और जो धरती पर रहता है..."

"उसकी सफेद दाढ़ी हो जाती है, है न?"

"हाँ, उत्पाती जीनियस! लेकिन यह सब समझने के लिए बड़ी होकर, चश्मा लगाकर मोटी-मोटी किताबें पढ़नी पड़ेंगी। तब ढेर सारा गणित, ढेर सारा अलजेब्रा..."

"अरे बाप रे! अंकल, अलजेब्रा..." मिन्नी उठ खड़ी हुई, "मेरा कल का होमवर्क..."

"हाँ-हाँ हो जाएगा, लेकिन उसके लिए भागने की क्या ज़रूरत है? ...

अच्छा बेटा, जाते-जाते फाटक बन्द करती जाना।"

फाटक के पास पहुँचते-पहुँचते मिन्नी को याद आया कि उसके कंचों की पोटली शर्माजी की कुर्सी के नीचे ही रह गई है। "धत!" उसने खुले गेट को बन्द किया और उलटे पाँव लौट गई। चौकीदार ने उसकी ओर एक उचटती निगाह डाली और मुस्करा दिया। इस गुड़िया को जैसे सभी ने सर चढ़ा रखा था।

दरवाज़े पर ही मिन्नी ठिठकी। शर्मा अंकल टेलिफोन पर किसी से बातें कर रहे थे। और उनकी बातों में उसने अपना नाम सुना।

"...हाँ-हाँ, चौधरी की लड़की – मिन्नी," शर्माजी बोल रहे थे, "मेरी तो ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गई। इसे रॉकेट के बारे में भनक कैसे पड़ी? ...हाँ-हाँ, नहीं-नहीं, बाद में पता चला धीरज ने उसे बस ट्विन पेराडॉक्स के बारे में बताया भर था; हाँ, उसने यह भी कहा था कि ऐसा रॉकेट बना नहीं है कहीं भी। मैं तो यार डर गया था, कहीं धीरज को अपने रॉकेट की बात तो मालूम नहीं हो गई... हाँ... मेरे खयाल में मिन्नी ने हमेशा की तरह सोचा होगा कि धीरज से ज़्यादा अंकल को पता होगा, सो बस आ गई... न-न, बस कुछ बिस्किट-विस्किट खिलाए, छोटा-सा उदाहरण दिया और समझा दिया। हाँ-हाँ, ये भी बताया कि कैसे

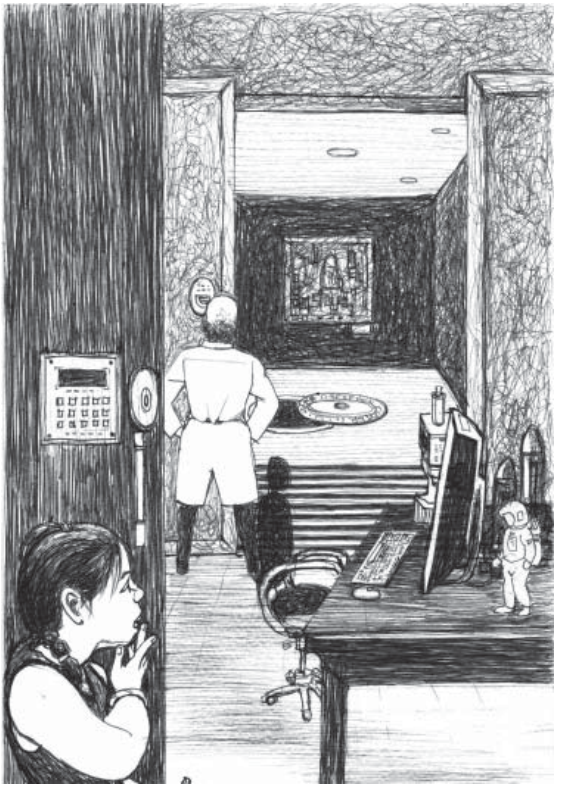

इतनी तेज़ चलने वाला रॉकेट वापसी में जल जाएगा।" यह कहकर शर्माजी ने एक कहकहा लगाया।

"हूँ... तो ये बात है!" मिन्नी ने सोचा, "मुझे बहकाया जा रहा था।" वह ध्यान देकर आगे की बातचीत सुनने लगी - "घबराओ नहीं, यहाँ कोई नहीं आता। वैसे कोई सोच भी नहीं सकता कि मेरे घर का बाहरी गुसलखाना उस रॉकेट का उड़ान-तल भी हो सकता है... हाँ, हूँ, और देखो कृष्णन, तुम्हारे वो बन्दर तैयार हैं न? हाँ, उनकी ट्रेनिंग तो अब पूरी हो चुकी होगी... बहुत अच्छे! कल सुबह तक सब हो जाना चाहिए... मेरी ओर से सब तैयार है। रॉकेट पूजाघर से सुरंग के ज़रिए गुसलखाने के नीचे आ चुका है। हरा बटन तो बन्दर खुद दबाएगा... नहीं-नहीं, हम लोग कुछ नहीं करेंगे। रॉकेट के अन्तरिक्ष में पहुँचने के बाद ही अपना काम शुरू होगा। क्या? हाँ, वह मेरे... मैं अभी जा रहा हूँ गुसलखाने में। यहाँ कौन सुनेगा हमारी बातें... भई, शर्मा का घर है, कोई मज़ाक थोड़े ही है... अच्छा, मैं फिर बात करूँगा। हाँ, अभी देखता हूँ..."

इधर मिन्नी के दिमाग में चक्कर चल रहा था। मुख्य रूप से वह काफी साहसी लड़की थी। टॉप सीक्रेट को सुनकर अपने सारे काम भूल गई। उसने तय किया कि वह चुपचाप अंकल के पीछे-पीछे जाकर तथाकथित 'गुसलखाना' देख आएगी। अगर अंकल ने देख लिया तो? कोई बहाना तो बनाना पड़ेगा। डाँट ही पड़ेगी, लेकिन रॉकेट देख पाने की तीव्र इच्छा के आगे डाँट का डर नहीं टिका।

शर्माजी ने फोन रख दिया और उठ खड़े हुए। उन्हें मिन्नी की उपस्थिति का आभास तक नहीं हुआ। दरअसल, उन्हें किसी की भी उपस्थिति की आशा नहीं थी। वे सीटी बजाते हुए 'पूजाघर' की ओर चल पड़े। मिन्नी भी दबे पाँव उनके पीछे हो ली। पूजाघर में डॉ. शर्मा ने मशीनी तौर पर दो-तीन बटन दबा दिए। अब उन्हें इत्मीनान था कि उनके घर में बिना जानकारी कोई प्रवेश नहीं कर सकता था। साथ ही, घर के बाहर जलता हुआ बल्ब समझदारों के लिए इशारा था कि कोई अन्दर न आए, लेकिन उन्हें यह कहाँ पता था कि एक नन्ही-सी आफत उनके आसपास ही मौजूद थी। उन्होंने दरवाज़े पर लगे ताले के नम्बर घुमाए। ताला खुलने के बाद उन्होंने दरवाज़े को दीवार की ओर सरका दिया। उनके सामने की दीवार के आगे एक लम्बी-चौड़ी मूर्ति थी। डॉ. शर्मा ने मूर्ति की ओर देखते हुए कहा, "मैं शर्मा हूँ, मैं शर्मा हूँ, मैं शर्मा हूँ।" मिन्नी ने देखा कि वह मूर्ति दो भागों में बँटकर दरवाज़े की तरह दीवार के अन्दर सरक गई। उसे खास आश्चर्य नहीं हुआ। खुद शर्मा अंकल ने ही उसे एक बार आवाज़ से

खुलने वाले दरवाज़ों के बारे में बताया था। इन दरवाज़ों की खासियत यह थी कि ये एक ही व्यक्ति की आवाज़ पर खुल सकते थे। मिन्नी को याद आया जब अंकल बता रहे थे, "बेटा, दिक्कत सिर्फ इतनी है कि जब मुझे काफी सर्दी हो जाती है न, तो कम्बख्त दरवाज़ा कभी-कभी खुलने से इनकार कर देता है।" "कितने चालाक हैं अंकल!" मिन्नी ने सोचा, "दरवाज़ा घर में है और मुझसे उस दिन कहा 'सॉरी भई, वो दरवाज़ा तो मेरी प्रयोगशाला में है, और बेटा जानती ही हो, वहाँ किसी को ले जाने की इजाज़त नहीं है', खैर अंकल भी क्या याद करेंगे जब पता चलेगा कि मैंने दरवाज़ा देख लिया है..."

* * *

शर्मा अंकल बातें करते हुए ऊपर आ रहे थे, "हाँ भई, देखो मैंने सब चेक कर लिया है। कमरे में ऑक्सीजन काफी है। तुम्हारे बन्दर को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। अगर इन्तज़ाम सफल रहा तो अगली बार हम अपने वैज्ञानिक बड़े आराम-से भेज सकेंगे। स्पेस-सूट की ज़रूरत ही नहीं रहेगी... खैर, आगे देखिए होता है क्या..."

मिन्नी इत्मीनान से अपनी जगह दुबकी हुई थी। शर्मा साहब ने मेनहोल का ढक्कन वापस लगा दिया और कमरे से बाहर निकल गए। दरवाज़ा बन्द हो गया। अब मिन्नी कमरे में अकेली थी। उसे कुछ उलझन-सी हुई। रॉकेट-वॉकेट तो कोई नज़र नहीं आ रहा। "चलो," उसने सोचा, "नीचे जाकर देखें, शर्मा अंकल ने शायद वहाँ रॉकेट छुपाकर रखा हो।" उसने मेनहोल का ढक्कन खोला और नीचे झाँका। नीचे फर्श तक जाने के लिए एक धातु की सीढ़ी लगी हुई थी। मिन्नी नीचे उतर गई। कमरा क्या था, कलपुर्ज़ों से भरा हुआ भानुमती का पिटारा था। पहली बात जो मिन्नी के ध्यान में आई, वह थी कमरे का सिलिंडर जैसा आकार। फर्श पर बीचोंबीच एक प्लेटफॉर्म-सा बना हुआ था। मिन्नी उसके ऊपर आ गई और घूम-घूमकर प्लेटफॉर्म का मुआयना करने लगी। तभी उसकी नज़र एक टेलीविज़न पर पड़ी जिसके ऊपर लिखा था 'क्या कहाँ है'। मिन्नी को तुरन्त याद आया कि ऐसे ही टेलीविज़न तो चौराहों पर लगे हैं जहाँ बसों के आने-जाने के समय वगैरह दिखाए जाते हैं। उसने बटन दबाकर टी.वी. को चालू किया। टी.वी. परदे पर उसे शर्माजी का घर दिखाई दिया, फिर धीरे-धीरे उनके घर के प्रवेश से लेकर पूजाघर का रास्ता दिखा। फिर मिन्नी ने जो कुछ देखा, उससे वह दंग रह गई। एक चित्र था जिसमें एक गोल रॉकेट की आकृति थी, उसके ऊपर शर्माजी के घर का हिस्सा था। मिन्नी को मेनहोल भी नज़र आया। अब रॉकेट के अन्दर का भाग नज़र आ रहा था। मिन्नी को

सीढ़ी नज़र आई। उसे यह भी एहसास हो गया कि इस समय वह जहाँ खड़ी थी, वह और कुछ नहीं, रॉकेट का अन्दरूनी हिस्सा था। ऊपर गुसलखाना और नीचे पता नहीं, मिन्नी ने सोचा, "क्या हो।" मन ने फिर कहा, "मिन्नी, सोच ले। कहीं गुम गई तो? फिर घर वापस भी नहीं लौट पाएगी।" पर भीतर की साहसी मिन्नी ने ज़ोर मारा, "हूँ... जहाँ बन्दर जा सकता है वहाँ मुझे क्या होगा? और फिर रॉकेट को क्या पता कि हरा बटन बन्दर ने दबाया या इन्सान ने..."

शर्माजी बड़े इत्मीनान से खाना खा रहे थे। कल के परीक्षण की उत्सुकता उनके चेहरे पर झलक रही थी। सामने की मेज़ पर बैठे धीरज को वे मिन्नी के आने के बारे में बता चुके थे। अचानक उन्हें एक थरथराहट-सी महसूस हुई। उन्होंने चौंककर टेबल की ओर देखा, निश्चय ही टेबल पर रखे बरतन काँप रहे थे। यहाँ तक कि जिस कुर्सी पर वे बैठे थे, वहाँ भी... "भूकम्प," उन्होंने इतना ही धीरज से कहा और दोनों बाहर की ओर भागे। शर्मा साहब को भूकम्प से भी बड़े धक्के का सामना करना था। उन्हें देखते ही चौकीदार चिल्लाया, "शर्माजी! शर्माजी! वो... वो घर का पिछवाड़ा!" डर से काँपते चौकीदार की उँगली की दिशा में शर्मा साहब मुड़े और ठगे-से खड़े रह गए। उनका 'गुसलखाना' धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठ रहा था और उसके नीचे उन्हें

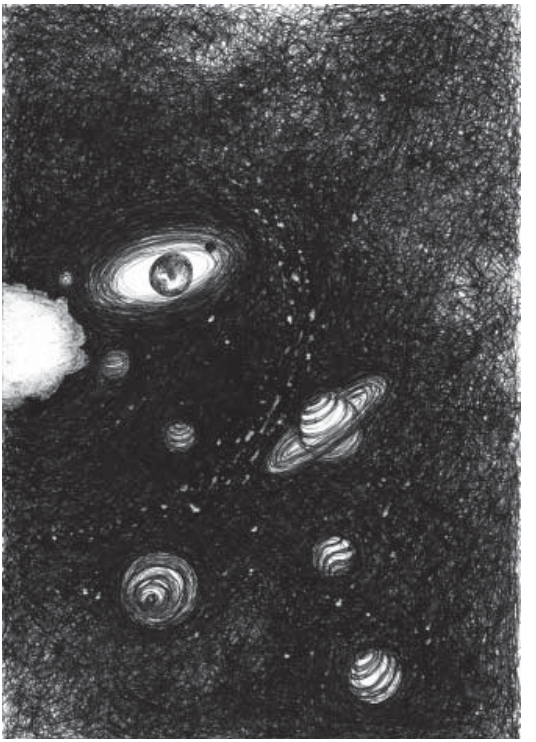

रॉकेट की धातुई खोल साफ नज़र आ रही थी। दूसरे ही क्षण रॉकेट पूरा बाहर आ चुका था। शर्माजी काँप गए। एक ही क्षण में लाखों सवाल उनके दिमाग में कौंध गए। "असम्भव," उनके मन ने कहा। उन्होंने खुद को ज़ोर की चिकोटी काटी। सामने का दृश्य सच्चा था। फिर अगला खयाल जो शर्माजी के दिमाग में कौंधा, वह सुरक्षा का था। "आँखें बन्द कर लो!" वे चिल्लाए। गति लेते हुए रॉकेट के निचले हिस्से से निकलने वाली लपट चमकीली होती जा रही थी...

...जारी

सतीश बलराम अग्निहोत्री: भारतीय प्रशासनिक सेवा के भूतपूर्व अधिकारी और अब आई.आई.टी. मुम्बई में प्राध्यापक। जन्म रत्नागिरि ज़िले के देवरूख गाँव में हुआ। बचपन बिहार के दरभंगा शहर में गुज़रा जहाँ स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की। इसके बाद आई.आई.टी. मुम्बई से फिज़िक्स और फिर पर्यावरण विज्ञान में एम.टेक. किया। फिर 1980 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में ओडिशा राज्य एवं केन्द्र सरकार में कई विशिष्ट पदों पर 35 साल सेवारत रहे। हिन्दी में विज्ञान कहानियाँ और लेख लिखने की शुरुआत तब की जानी-मानी पत्रिका 'धर्मयुग' से हुई। व्यंग्य रचनाएँ भी लिखते रहते हैं। सम्पर्क - satishagnihotri1955.in

सभी चित्र: पूलता ब्लैकडॉट: एक कलाकार हैं। वे फाउंड ऑब्जेक्ट्स, रोज़मर्रा के सामान, समय की रैखिकता, स्पेस, यादों और निजी अनुभवों के साथ काम करते हैं। सम्पर्क - pooltahblackdot@gmail.com